http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 3, 4-5

Article ID: 362

ढैंचा की हरी खाद

डॉ. हरिकेश[1], डॉ. दिलीप कुमार तिवारी[2], डॉ. अजीत कुमार[3]

[1]सहा. प्राध्यापक (प्रवक्ता) सस्य विज्ञान विभाग , आशा भगवान बक्श सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय पूरा बाजार, अयोध्या, उ.प्र.

[2]सहायक प्राध्यापक, श्री परमहंस शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय विद्या कुंड अयोध्या

[3]सहायक प्राध्यापक ,कृषि सस्य विज्ञान विभाग बी एच यू, (राजीव गाँधी साउथ कैंपस बरकछा मिर्जापुर) उ.प्र.)

प्रायः भूमि में जैविक पदार्थ की बहुत कमी होती है। इस कमी को पूरा करने के लिये जायद यानी गर्मी के मौसम में खेतों में गेहूँ की कटाई के बाद हरी खाद हेु ढैंचा की बुवाई करनी चाहिये।

ढैंचा ही क्यों?

- हरी खाद की अन्य फसलों की अपेक्षा ढैंचा में ऊसर को सहने की अधिक क्षमता होती है।
- हरी खाद अन्य फसलों की अपेक्षा ढैंचा में कम अथवा अधिक पानी में उगने व बढ़ने की क्षमता होती है।
- पौधों में कैल्शियम होने के कारण भूमि में मौजूद सोडिक लवण हटाने में सक्षम होता है।
- ढैंचा की पत्तियॉ व पेड़ मिट्टी में सड़कर सल्फ्यूरिक अम्ल बनाते हैं जिससे भूमि का ऊसरीलापन खत्म हो जाता है।
- इसकी जड़ें भूमि की अधिक गहराइ में जाने के कारण भूमि को पोली बनाती हैं।

ढैंचा से लाभः

- भूमि में जीवांश की मात्रा बढ़ जाती है।
- भूमि अधिक उपजाऊ बन जाती है।
- भूमि में जल सोखने की क्षमता बढत्र जाती है। भूमि में माइक्रोबियल (सूक्ष्मजीवी) क्रियायें बढ़ जाती हैं।
- ठसकी जड़ों की गॉठों में बैक्टिरिया होते हैं जो वायुमण्डल से नत्रजन खींचकर पैधों को सुलभ कराते हैं और नत्रजन को गॉठों में इकट्ठा करते हैं।
- 60—80 लिोग्राम नत्रजन आगामी फसल में पगति हैक्टेयर उपलब्ध होता है जो 174 किलोग्राम यूरिया के बराबर होता है।
- भूमि का पी. एच. कम होने से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है।
- ढैंचा से 150 से 250 कुन्तल हर खाद प्राप्त होती है और एक कुन्तल हरी खाद 2.80 कुन्तल गोबर की खाद के बराबर हरी खद प्राप्त होती है।

खेत क तैयारीः

खेत में ओट आने पर 2—3 बार जुताई करके क्षेत को ठीक प्रकार से समतल कर लें।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचारः

एक हैक्टेयर क्षेत्रफल के लिये 5.—60 किलोग्राम बीज प्रयोग होता है।

बुवाई के पूर्व बीज को रातभर पानी में भीगो दें और पानी से बार निकालने के बाद 60 किलोग्राम बीज पर 4 किलोग्राम जिप्सम छिड़ककर उसे भलीभॅति हाथ से मिला दें। जिप्सम मिलाते समय बीज के उपर हाथ से पानी के छिंटे दे दें। बीज को जिप्सम से उपचार करने का तरीका यह भी है कि 2 लीटर पानी में 4 किलोग्राम प्सिम घोलकर लेई की तरह पेस्ट बना लें और फिर इस

e-ISSN: 2583 - 0430
कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

पेस्ट को बीज के ऊपर छिड़ककर उसे हाथ से मिला दें औ जब जिप्सम बीज के ऊपर ठीक से चिपक जाये तो उसे छाया में सुखाने के बाद बोआई कर दें। इस प्रकार उपचारित बीज बोने बीज का जमाव अच्छा होता है और पौधों की बढ़वार के लिये अनुकूल वातावरण मिलता है, जिससे वे जल्दी बढ़ते हैं।

बोआई का समयः

ढैंचा की बोआई 15 मई के आस–पास अवश्य कर दें ताकि जुलाई के प्रथम सप्ताह में धान की रोपाई हो जाये।

बोआई की विधिः

खेत को देशी हल या कल्टीवेटर से उथला 4–5 से. मी. तक जोतकर उपचारित बीज को समान रूप से बिखेरने के बाद खेत में हल्का पाटा लगा दें। ध्यान रखे कि खेत में उपयुक्त नमी रहे। बोआई सुबह या शाम में करनी चाहियेजिससे धूप का प्रभाव भीगे हुये बीजों पर सीधे न पड़ सके।

सिंचाईः

पहली सिंचाइ बोआई के एक सप्ताह बाद करनी चाहिये। यदि पौधें की बाढ़ कमजोर हो तो 40–50 किलोग्राम यूरिया की टाप ड्रेसिंग प्रति हैक्टेयर की दर से कर देनी चाहिये। ढैंचा की 45 दिन की फसल के लिये 3–4 सिंचाइ की जरूरत पड़ती है। 20 जून से मानसूनी वष्र्ग होने पर सिंचाई नहीं करनी चाहिये।

फसल को मिट्टी में पलटना, दबाना, सड़ाना और धान की रोपाईः

जब ढैंचा की फसल 45 दिन की हो जाये तो पहले पाटा लगाकर जमीन पर गिरा दें। मेंड़ की चार लाइने या तीन फुट क्षेत्र में ढैंचा की पलटाई न करें। यही ढैंचा बाद में धान की फसल को टुन्ग्रु वाइरस बीमारी से बचायेगा औ अगली फसल के लिये ढै।चा बीज व ईंधन प्राप्त होगा। इसके बाद डिस्क हैरो या तवे वाले हल से या मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करके पौधों को 15–20 सेन्टीमीटर गहराई की सतह में दबा देना चाहिये। इसके बाद खेत में 10–15 सेन्टीमीटर पानी भरकर फसल को 5 दिन तक सड़ायें। चूँकि ढैंचा की फसल शीघ्र ही अपघटित होना शुरू हो जाती है और पौधों को अमोनिया उपलब्ध होने लगता हे। अतः 5 दिन के बाद धान की रोपाई कर दें, इसमें देर करने पर नत्रजन का ह्रास होता है।

बीज उत्पादन विधिः

बीज उत्पादन हेतु खरीफ का मौसम उपयुक्त हाकता हे। यदि भूमि अधिक क्षारीय हे तो जिप्सम का प्रयोग और लीचिंग क्रिया सम्पन्न करने के बाद ही ढैंचा की बोआई करनी चाहियें इसकी बोआई वर्षा के शुरू हो जाने पर और जुलाइ के मध्य में भूमि की उपयुक्त नमी की दशा में कर देना चाहिये। बीजोत्पादन के लिये प्रति हैक्टेयर 25 से 30 किलोग्राम बीज की आवष्यकता होत है। बीज को हल के पीछे या छिटकवा विधि बोआई कर दें। बोआई के एक स्प्ताह बाद यदि वर्षा नही हो रही है तो हल्की सिंचाई कर दें। पौधे को शीघ्र बाढ़ के लिये 40–45 किलोग्राम यूरिया पगति हैक्टेयर की दर से सिचाई के बाद टापड्रेसिंग कर दें इस प्रकार फसल नवम्बर के मध्य में तैयार हो जायेगी। पौधों में जब 80 से 90 प्रतिशत फलियॉ पक जाये तो फसल की कटाई करके बीजों की मड़ाई कर लेनी चाहिये। सुधरी हुई ऊसरीली भूमि में लगभग 10 से 12 कुन्तल बीज उत्पादित होता है।

किसान भाई जायद में हरी खाद के लिये अपना कुछ बीज स्व्यं तैयार कर सकते हैं। इसके लिये उन्हें धान की रोपाई के बाद खेत के चारों ओर 3–4 लाइन में बो देना चाहिये।इस प्रकार धान की फसल के साथ ढैंचा की फसल से बीज भी मिल जाता है जिसका प्रयोग जायद में हरी खाद के लिये किया जा सकता है।